

पञ्चाभिषेक

शशियस्य निः ॥ शिवशिववदित्तस्य मरुत्तस्य नस्य गलं रवत्तु न व
वमातिष्ठके ॥ लोचिष्ठ ॥ ३॥ को न ववगा रमि लोके नाथ मिमल्युदि
न ॥ ३॥ शिववदित्तस्य मरुत्तस्य नस्य गलं रवत्तु शक्तिवत्तु वा ॥
न नोद्यदिष्ट ॥ ३॥ वनस्य कस्या ॥ ३॥ शिववदित्तस्य मरुत्तस्य नस्य गलं रवत्तु शक्तिवत्तु वा ॥
स ॥ शक्तिवत्तु ॥ ३॥ शिववदित्तस्य मरुत्तस्य नस्य गलं रवत्तु शक्तिवत्तु वा ॥ सद्यम्
यत्तु ॥ ३॥ शिववदित्तस्य मरुत्तस्य नस्य गलं रवत्तु शक्तिवत्तु वा ॥ सद्यम्

II-72

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महानिहार

युवराजस्य नां गत्य गलं रव गुरु क्षति करं गवाय ॥ धर्मि गम आयद
वं गुरु रवि य ॥ ॥ रावना ॥ पावलि रस थिय कं गय ॥ नृती हं
ऊं हं का ना धि लि रं व कं ऊं मे ना द्वा रं स्व द्वा ऊं व क्ष पा नी नं इ न स
खे की र्म मंद स्या संयुक्त ॥ गत्य त्रि द न न स वा क व ग दी न वा धि वि ला
म उ र य द स य स व व का ग लि ल लि ने न ग स रा व व ऊं ॥ शं म दा स स
सु र र स र वि र के द स न र वि र के मि सर्व न थ ग ना धि य स न द्वा

रव ॥ धन रव क न ॥ स म ल ॥ ॥ अरि य क म दा व ऊं र्म ध न कं
न म क र्म ॥ दा दा मि सर्व व द्वा नां गि गु काल य सं र व ॥ य ॥ हं ना थ x
थ पा ग्रा रि य क र य ग थ द द्वा काल गु लि ध न स वा द द व ना व
नि स क ल स न न म क्का या दा ग या गु स म ल व द्वा नि स ल गु लि गु
ऊ या र्म र्म या डा उ य मि र्म या वा द गु थ थि द गु पा गु या गु अरि य
क वि र वि क य मा ल व क र्म य नि सि य य नि स न गु र्म क यार्थ ना या

न॥ ॥ ओं जाव का द का रि वि के हूं स न ग स म हूं ॥ थ नि प द यं वि
 य ॥ ॥ ॐ त्र द का रि वि क ॥ ॥ स्व क ने ॥ नि लो का वा यु म कूटं सर्व स
 लार्थ साध कं द हि म क वृ क्ष का न व ऊ स त्व गु ष्म शु यं ॥ द ना थ ॥ ॐ
 स या ल र य ऊ नि क वृ क्ष व नः ॥ स ग लि गु व नं य का स रु या डी वा दः
 गु व रु स त्व न थ ग न या गु ष्म या डी रु थ वा द गु म कूट या सु रि थ क
 कि य नि ल वि स वि का य मा ल ॥ ॥ रा व ना ॥ ओं का व ऊं व ल स म

व वृ पि नं ऊ न स त्व न की क गं न र ल न थ ग न द बी रि ॥ ॐ मे व रि
 वि वा मा नं व य व ऊ दि रि व य मा नी य मा न म रं ल गी नि कं ल व थ म
 ॥ ॥ न ग ॥ क न क व म्मा दि च टि गं व ल स र व ऊं म कूटं न त्व ल
 वं व ऊं ऊ न स त्व वृ यं य के न थ ग न म थ लि ग लि या क ल ल व थि
 वि गं न ल रि व स म थ ल ल न स मा वा य ॥ लि व स य य के वृ वा क
 दि ल के ॥ ॥ ॐ व ऊं व ल स र वि क रि वि के हूं ॥ ॐ स त्व व ऊं

अरिषि के नूं ॥ ॐ रत्न वज्र अरिषि के नूं ॥ ॐ धर्म वज्र अरिषि
के नूं ॥ ॐ कर्म वज्र अरिषि के नूं ॥ ॐ नमः सर्व वृत्तानुं भक्तु कंत
मस्तु नय्या कयुज नाथ यम कट प के क ल क व ॥ ॐ सर्व वृद्ध वृज
महिम दाम कट प नी क द ॥ ॐ अरिषि के ल्यादि ॥ ॐ आ १ वरु म क
ठा रिषि के दूं स न ग स म हूं ॥ ॐ गिय द पं प य के ॥ ॥ य के इ
न स ल वा द ॥ द हि म व र य म म अ वि या य न नि हें य इ न

या फा र वा म दं ॥ ॥ द ना थ x दा ना गु इ नं उ त्प रि रु या डा था
द गु व रु या व न डि य नि अ इ न द न क न डा थ द इ न ला य नि मि
हि न व रु या अ रि ष क डि य नि लु वि का य मा ल ॥ ॥ ला व ना
॥ म टि मि दी १ य म प वि ह ना मि ना र वृ यं इ न स ल रि नं नि ष वं उं
वा मि ना ल स कं वि वि न्य ॥ अ रि ष के म द व रु या दि ॥ अ शा रि क
ल म सि व दे व अ रि ष के न १ ॐ द ना सर्व वृद्ध लं ग द व रु स सि द

य॥ अथ निवेदयं व ऊ न क थू कया लु न ग ल स थि य कं ला दा गि स ल ला
य॥ ॥ पु ज्ञा या त्र मि ता नू यं च ॥ हा व द द स म य नू पा फ न
स र्व भू या ॥ १ ॥ स्या म द म रु तं ॥ द ना थ ॥ य पु ज्ञा या त्र मि ता स नू य रु
सं वा द गू य छ या हा व म द य कं डि य नि रु द न कू का न भ ध ल स सा था
ग य श मि न सा या डा पु नि य नि रु दि न या य नि मि लि न य छ या गू ज
रि थ क डि य नि रु वि स वि का य मा न ॥ ॥ ला व ना ॥ इ वं इ व ॥

जा मा द सि द्ध नू यं ऊ न स लो रि त्रं च ॥ १ ॥ मा य सि य नि हा नां वि
ला य नू ॥ ॥ अ रि थ कं ला दि ॥ ३ ॥ व ऊ धि य नि ला म रि थि कं
मि नि य व रु स म य ल ॥ १ ॥ ३ ॥ व रु च छ ज ॥ १ ॥ ३ ॥ गू दि ना इ मि म या
र ग व न्म यि स त्रि दि ना र व ॥ अ थ नि वे द यं व छ न क थू क या नू ग ल स
थि य कं इ व डा ला दा गि थं न कं ॥ ला व ना ॥ ३ ॥ व कं वं न व नू यं ऊ
न स लो क न स वि ला या ॥ अ रि थ कं ला दि व रु च छ का स हि व क थू न

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ गगनजसिंहावलीकोकिये घुडध्वज
नाथं माद ॥ धनजसिंहावलीकोकिये ॥ ज्ञायां पचायः गुणमधुलनाय ॥
गवा ज्ञावन ॥ सिंहावन के ॥ मधुलनाथिन के ॥ विसेऊन ॥ धनसमाधिया
य ॥ कत्रसाधिवानन ॥ दंडाज्जाविधिथं ॥ धनजसिंहिच के ॥
सावाथय के ॥ चय के ॥ वाः पूय के ॥ रुवा ॥ रुवायामे ज्ञाय के ॥ वा
ज्ञावनया ॥ वात्रदयैयथान के ॥ १३ ॥ वनको डाय जा रल जय

२५८ लाब धन वि

१ क ष ग वि सि

[illegible]

ما

[illegible]

[illegible][illegible]

श्री ५ श्री ५

[illegible]

अनकाविधि

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ इति श्रीभक्तिसहितप्रबोधनसंग्रहः ॥

[illegible][illegible]